वर्ग- द्वितीय
विषय- हिन्दी
तारीख-1-4-2020

पाठ-1 माँ

माँ हमको लगती प्यारी है,
माँ की ममता ही न्यारी है ।
पहले तो माँ दुलारती है,
दुलारकर हमें जगाती है,
विद्यालय के लिए फिर माँ ही,
करती सारी तैयारी है ।
विद्यालय से वापस आते ,
माँ को मुस्काता ही पाते।
हमको मुस्काता देखती तो ,
माँ जाती वारी वारी है ।
माँ ही गंगा की धारा है,
माँ ही मेरी फुलवारी है।

- डॉ0 रामजी शास्त्री

शब्दार्थ- ममता - माँ का प्यार
न्यारी - अनोखी
वारी - वारी- न्योछावर होना
दुलारती- प्यार करती
फुलवारी - फूलों का बगीचा

गृहकार्य -- पाठ 1 माँ कविता याद करें ।